सन्त थानेदार

सन्त थानेदार

(आत्मवान सत्पुरुष श्री रामसिंह भाटी के जीवन-प्रसंग)

लेखक
शार्दूल सिंह कविया

राम समाधि आश्रम
मनोहरपुरा (जगतपुरा)
जयपुर

लेखक :

शार्दूल सिंह कविया

पूर्व संयुक्त निदेशक,
शिक्षा विभाग, राजस्थान

© सर्वाधिकार लेखकाधीन

प्रकाशक :

राम समाधि आश्रम

मनोहरपुरा (जगतपुरा)
जयपुर (राजस्थान)

शत-जयन्ती महोत्सव प्रकाशन

प्रथम संस्करण - 1997
द्वितीय संस्करण - 2003
तृतीय संस्करण - 2008
चतुर्थ संस्करण - 2010

मूल्य : 20.00

प्राप्ति स्थान :

राम समाधि आश्रम

मनोहरपुरा (जगतपुरा)
जयपुर (राजस्थान)
मो. : 99298-19111
99820-76750
98282-69273

कम्प्यूटर टाईप सेटिंग व प्रिंटिंग

आचार्य मैत्रेय एस्ट्रो अकादमी (प्रकाशन विभाग)
'रामाश्रम' 3/18,मालवीय नगर, जयपुर-302 017
फोन : 0141-2521849 • मो.: 94134 44188
Web : www.amastroacademy.com

आत्म निवेदन

इस धरती पर न जाने कितने मानव जन्म लेते हैं और चले जाते हैं। इनके बीच कभी कोई सात्त्विक आधार अवतरित हो जाता है, जो अन्धकार में भटकती मानवता को दीपक दिखा जाता है। मानव कितना ही भौतिकतावादी क्यों न हो जाये ऐसी पुनीत आत्माएँ उसे सदा सुहाती रही हैं।

सन्त रामसिंह एक ऐसे ही सत्पुरुष हुए हैं, जो गृहस्थाश्रम में रहकर आदर्श मानवता के मापदण्ड स्थापित कर गये, पुलिस-सेवा में रहकर ईमानदारी और सेवा-परायणता की मिसाल कायम कर गये, दुनियादारी में रहकर सदा बेदाग रहे और परमार्थ के पथ पर चलकर इसी जीवन में परमपद प्राप्त कर लिया। कहने को तो वह एक सूफी सन्त हैं, किन्तु वे मतवादी न होकर सही अर्थों में मानवतावादी हैं।

सन्त थानेदार के जीवन-प्रसंग इस संसार के तुमुल कोलाहल के बीच एक मधुर संगीत है; ऐसी सुखद गाथा है जिसे पढ़कर पाठक युगों तक आनन्दानुभव करते रहेंगे। जो जितना सहृदय होगा वह इन पावन प्रसंगों को पढ़कर उतना ही आनन्दित होगा।

आदिकाल से ही मानव मानवता का भूखा है। कहीं उसके विकास की गति अवरुद्ध हो गई है तो कहीं वह दिग्भ्रान्त हो गया है। फिर भी वह जाने-अनजाने में अपने मूलस्रोत की ओर अग्रसर होना चाहता है। वह उस भावभूमि तक पहुँच जाना चाहता है जहाँ शाश्वत शान्ति है, असीम प्रेम है और आनन्द ही आनन्द है। जहाँ अज्ञान का आवरण हट जाता है, द्वैत की दुविधा मिट जाती है, जहाँ प्रेम का पारावार लहराता है; वह ऐसी मानवता की ओर बढ़ना चाहता है। हमारे सन्त थानेदार के सत्प्रसंग मानवता का अक्षय कोष हैं।

विनीत

शार्दूल सिंह कविया

प्राक्कथन

परम पूज्य परमसन्त श्री रामसिंह भाटी के जन्मशती समारम्भ समारोह पर पुस्तक ''सन्त थानेदार'' पाठकों के हाथों में प्रस्तुत करते हुए हर्ष हो रहा है। ठाकुर साहिब से सम्बन्धित पुस्तकों की बहुत माँग रही है। इससे पूर्व का प्रकाशन ''सद्गुरु-प्रसाद'' ही उपलब्ध है जिसका प्रकाशन 14 जनवरी, 1997 को किया गया था। इसमें ठाकुर साहिब के कुछ लेख हैं जिनकी व्याख्या श्रद्धेय श्री बालकुमार खरे जी ने की है जो समर्थ सद्गुरु महात्मा रघुवर दयाल जी (चच्चा जी महाराज) के शिष्य हैं और राजकीय बेसिक ट्रेनिंग कॉलेज वाराणसी से प्राचार्य पद से सेवा निवृत हैं।

''सन्त थानेदार'' पुस्तक में ठाकुर साहिब के जीवन प्रसंगों का संकलन है। जीवन-प्रसंग पाठक के हृदय पटल पर बड़ा प्रभाव डालते हैं और उनसे हमें मार्ग-दर्शन मिलता है। प्रसंगों के संकलनकर्त्ता ने उनका संपादन कर उनको ज्यों का त्यों रखने का प्रयास किया है, उनसे निष्कर्ष निकालना पाठक पर ही छोड़ दिया है, क्योंकि लेखक द्वारा निष्कर्ष की प्रस्तुति उसके अपने भावों से अनुरंजित हो सकती है।

पुस्तक के संकलनकर्त्ता- लेखक का सन्त महापुरुष से एक लम्बा सम्पर्क रहा है। प्रथम मिलन 1957 में हुआ, इसके पश्चात् अन्त तक समय-समय पर आपसे सत्संग लाभ ग्रहण करते रहे। आप ने ही इन्हें आध्यात्मिक दैनन्दिनी लिखने को प्रेरित किया और उसके फलस्वरूप श्री शार्दुल सिंह कविया ने 1963 से यह दैनन्दिनी लिखना प्रारंभ किया जो 1970 तक जारी रहा। पुस्तक में जो प्रसंग हैं वे इसी से लिए गए हैं और पूर्ण प्रमाणिक हैं। अन्य प्रसंगों को भी स्वयं विभिन्न व्यक्तियों से मिलकर, या पत्राचार द्वारा संकलित किया गया है।

वर्तमान पुस्तक के लेखन की प्रेरणा आपको यहाँ समाधि-स्थल पर गत भण्डारे पर ठाकुर साहिब से हुई थी। इसलिए इस कार्य को

पूर्ण कर एक बहुत ही प्रशंसनीय कार्य किया है, जिससे पता नहीं किन-किन को लाभ पहुँचेगा। इसके लिए संस्थान उनका आभारी है। वे स्वयं भी इस कार्य को पूर्णकर कृतकृत्य मानते हैं। श्री शार्दूल सिंह कविया शिक्षा विभाग, राजस्थान से संयुक्त निदेशक के पद से सेवा निवृत हुए हैं और कई पुस्तकों के लेखक हैं। मुझे याद है जब आप एस.टी.सी. स्कूल, खेतड़ी में प्राचार्य थे, उस समय आपके पहुँचने पर ठाकुर साहिब खेतड़ी में ''रामकृष्ण मिशन'' के बारे में आपसे पूछते थे; वहाँ के संन्यासी सन्तों और क्रिया-कलापों के बारे में जानकारी लेते थे। आपने श्री रामकृष्ण मिशन का साहित्य और नाथ सम्प्रदाय का गहन अध्ययन किया है और विभिन्न संत महात्माओं का सत्संग लाभ लिया है।

वर्तमान में समाधि मन्दिर और आश्रम आध्यात्मिक-पथ के अनुगामियों के लिए एक आकर्षण का केन्द्र है और सांसारिक अग्नि से तप्त मानव यहाँ आकर कुछ समय के लिए अपने आपको मुक्त और शान्त पाता है; सन्तों का कृपा-प्रसाद लेकर फिर अपनी मंजिल की ओर चल देता है। यहाँ वही सत्य अभिव्यक्त होता हुआ दिखाई देता है जो ठाकुर साहिब के पूज्य गुरु-भगवान महात्मा श्री रामचन्द्रजी (लालाजी महाराज) ने अपने फनाफिल मुरीद (वह शिष्य जिसमें उसके प्रेम के कारण गुरु स्वयं की चेतना को एकीभूत कर देता है) शिष्य रामसिंह द्वारा उनको गुलाबों का गुलदस्ता भेंट करने पर आशीर्वचन में कहा था, **''रामसिंह! इन गुलाबों की सुगन्ध की तरह तुम्हारी भी सुगन्ध फैलेगी।''**

अन्त में इस पुस्तक के प्रकाशन में जो भी सहभागी रहे हैं, उन सभी का राम समाधि आश्रम, मनोहरपुरा (जगतपुरा) हृदय से आभारी है।

आज दिनांक 3 सितम्बर, 1997 को परम पूज्य ठाकुर साहिब के जन्मशती समारोह समारम्भ के अवसर पर उन्हीं की प्रेरणा-स्वरूप तैयार यह पुस्तक उनके कर कमलों में सादर सप्रेम समर्पित है।

परम प्रभु के भक्तों का सेवक,

नारायण सिंह भाटी

अनुक्रमणिका

क्रम	प्रसंग	विवरण	पृष्ठ
1.	**सात्त्विक आधार**		
		सन्त रामसिंह	1
		गुरु भगवान का आगमन	5
		अनुग्रह की अनुभूति	10
2.	**निराला थानेदार**		**11**
		मानवोचित व्यवहार	11
		साधु स्वभाव और करुणा भाव	16
		प्रसन्नता	19
		स्वच्छता	20
		अपना काम अपने हाथ	21
		सदाचार और सत्यनिष्ठा।	24
3.	**पुलिस-सेवा के प्रसंग**		
		सांभर से सवाईमाधोपुर	26
		जयपुर कोतवाली का सत्संग	27
		ईमानदारी की पराकाष्ठा	30
		इन्साफ की डगर पर	31
		दो टूक उत्तर	32
		पुलिस थानेदार की बुलन्दी	33
		हुजूर के खिलाफ रपट	34
		यशोज्ज्वल चरित्र	36
		खरी कमाई में बरकत	37
		चौअन्नी की महिमा	38
		कर्त्तव्य निष्ठा	39
		साहसिक कदम	42
		सत पर सांई खड़ा है	44

क्रम	प्रसंग	विवरण	पृष्ठ
4.	**भूले-बिसरे प्रसंग**		**46**
		दरवेशी पर्दापोशी	47
		साचे राचे राम	48
		आदर्श महापुरुष	50
		अपंग का आगमन	51
		अमृत भोजन	53
		प्रेम वर्षण	55
		याद किया तो चला आया	56
		उपेक्षित का आदर	57
		लघु प्रसंग	61
5.	**परमार्थ-प्रसंग**		**68**
		यह भी एक नशा है	70
		राजकोष का प्रहरी	74
		उँट चराने वाले को सीख	76
		दिल की किताब पढ़ा करो	79
		नियम और विश्वास	80
		श्रद्धा और समर्पण	81
		ऐसा अमृतपान कराया	84
		परमार्थ के पथ पर	86
6.	**सिटी पैलेस में सत्संग**		**91**
		सत्संग का आनन्द	91
		मंगलवार का सत्संग	92
		लोटपोट गुरु की ओर	94
		बुढ़ापे का सत्य	96
7.	**सन्त परम हितकारी**		**99**